कठपुतली का खेल

धरती गगन
वायु और पानी
अग्नि से ताक़त पाते हैं,
प्रकृति का रूप बनाकर
जीने की कला सिखाते है,
दुनिया रूपी रंगमंच का
सूत्रधार ताकतवर है,
छोटे बड़े बना खिलोने
धरती पर भेजता रहता है,
उन्हें खेलता देख देख
वो मंद मंद मुस्काता है,
पूरा समय हो जाने पर
वापस उसे बुलाता है,
कठपुतलियों के खेल में
पुतला ही हँसता रोता है,
कठपुतली का हर रिश्ता
धरती पर साथ निभाता है,
सूत्रधार के कहने पर
सपना बनकर उड़ जाता है,
रंगमंच से उड़ते ही
हर साथ बिखरता जाता है,
कुछ दिन याद रहकर
इतिहास बनकर रह जाता है,
ये आना जाना धरती पर
जीवन का चक्र कहलाता है,
सूत्रधार की अंगुलियों पर
हर जीव नाचता रहता है,
अभिनय पूरा करके
झोली में वापस जाता है,

✍ **गोपाल कृष्ण व्यास**